स्नातक उपाधि कार्यक्रम
(बी.डी.पी.)

सत्रीय कार्य
(जुलाई 2025 एवं जनवरी 2026 सत्रों के लिए)

हिंदी काव्य
पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.डी–02
हिंदी में ऐच्छिक पाठ्यक्रम

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

हिंदी में ऐच्छिक पाठ्यक्रम
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम : बी.डी.पी/ई.एच.डी–02/टी.एम.ए/2025–26

प्रिय छात्र/छात्राओ,

इग्नू में मूल्यांकन दो भागों में होता है। i) सत्रीय कार्य द्वारा सतत मूल्यांकन, और ii) सत्रांत परीक्षा। अंतिम परीक्षा परिणाम में, सभी सत्रीय कार्यों के लिए 30 प्रतिशत अंक (100 का अधिभारित) निर्धारित है, जबकि सत्रांत परीक्षा के लिए 70 प्रतिशत अंक।

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य–सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जुलाई 2025 सत्र के लिए	**:**	**30 अप्रैल, 2026**
जनवरी 2026 सत्र के लिए	**:**	**31 अक्तूबर 2026**

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इस सत्रीय कार्य में आपसे मुख्य रूप से तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं :

1. संदर्भ सहित व्याख्या
2. निबंधात्मक प्रश्न
3. टिप्पणियाँ

संदर्भ सहित व्याख्या में काव्यांश का संदर्भ और अर्थ, काव्य सौंदर्य तथा काव्य भाषा की विशेषताओं को शामिल किया जाना अपेक्षित है। व्याख्येय अंशों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में देने हैं। निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 600 भाब्दों में लिखने हैं तथा टिप्पणियों के उत्तर लगभग 300 शब्दों में देने हैं।

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास :** उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आव यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,
ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,
ग) उत्तर, प्रश्न में निर्धारित भाब्दों से अधिक लंबा न हो, और
घ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति :** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

हिंदी में ऐच्छिक पाठ्यक्रम – हिंदी काव्य
(सत्रीय कार्य)

पाठ्यक्रम : बी.डी.पी/ ई.एच.डी–02
सत्रीय कार्य कोड : ई.एच.डी–02/टी.एम.ए/2025–2026
पूर्णांकः 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10x4=40

(क) बूझत स्याम कौन तू गोरी।
कहाँ रहति काकी है बेटी, देखी नही कहूं ब्रज खोरी।।
काहे कौं हम ब्रज–तन आवतिं, खेलति रहहिं आपनी पौरी।
सूनत रहतिं स्त्रवननि नंद ढोटा, करत फिरत माखनदधि चोरी।।
तुम्हरौ कहा चारि हम लैहें, खेलन चलौ संग मिलि जोरी।
सूरदास प्रभु रसिक (-) सिरामनि बातनि भुरह राधिका भोरी।।

(ख) जाके प्रिय न राम वैदेही।
से छड़िए कोटि बैरी समजदपि परम सनेही।
तज्यो पिता प्रहलाद विभीषण बंधु भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यों कंत ब्रज वनतनि भये जग मंगलकारी।
नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसंव्य जहाँ लों।
अंजन कहा आंखि तेहि फूटै बहुतक कहौं कहाँ लों।
तुलसी सो सब भांति परम हित पूज्य प्राण ते प्यारो।
जासों होय सनेह राम पद ये तो मतो हमारो।

(ग) रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे मोती मानस चून।।

(घ) हिमाद्री तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वंयंप्रभा समुज्ज्वला
स्वतन्त्रता पुकारती
अमर्त्य वीरपुत्र हो, दृढ़– प्रतिज्ञ सोच लो,
असंख्य कीर्ति–रश्मियाँ
विकीर्ण दिव्य दाह सी
सपूत मातृभूमि के
रूको न शूर साहसी।
अराति सैन्य–सिन्धु में–सुवाड़वाग्नि से जलो,
प्रवीन हो जयी बनो–बढ़े चलो बढ़े चलो।

2. निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए : 10 x 5=50

(क) आदिकाव्य की प्रतिनिधि रचनाओं पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
(ख) तुलसीदास की कविता के भाव–पक्ष पर विचार कीजिए।
(ग) घनानंद के काव्य में निरुपित प्रेम भाव पर अपना पक्ष रखिए।
(घ) प्रगतिवाद की अन्तर्वस्तु पर प्रकाश डालिए।
(ड.) नई कविता के अर्थ को स्पष्ट करते हुए, नई कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

3. निम्नलिखित में से प्रत्येक पर लगभग 300 शब्दों में टिप्पणी लिखिएः 5 x 2=10

(क) निराला का रचना–विधान
(ख) कुरुक्षेत्र का प्रतिपाद्य